# अजायब बानी

मासिक पत्रिका

जुलाई-2022

RNI No - RAJHIN/2003/9899

मासिक पत्रिका

# अजायब बानी

वर्ष–बीसवां | अंक–तीसरा | जुलाई–2022

मन मेरे क्यों ना सुने 2

एक पत्र 3

परमात्मा 7

सन्तों की सलाह 19

सवाल–जवाब 27

नाम का व्यापार 32



प्रकाशक : **सन्तबानी आश्रम** 16 पी.एस. रायसिंह नगर–335 039 जिला–श्री गंगानगर (राजस्थान)

संपादक : **प्रेम प्रकाश छाबड़ा** 99 50 55 66 71 80 79 08 46 01

विशेष सलाहकार : **गुरमेल सिंह नौरिया** 96 67 23 33 04 99 28 92 53 04

उप संपादक : **नन्दनी** सहयोग : **ज्योति सरदाना, परमजीत सिंह व डॉ. सुखराम सिंह**



e-mail : dhanajaibs@gmail.com 244 Website : www.ajaibbani.org

RSG-01, V.I.P. Colony, Ridhi-Sidhi Enclave Ist, Sri Ganganagar - 335 001 (Rajasthan)

# मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात

मन मेरे क्यों ना सुने गुरु की बात x 2
क्यों ना सुने गुरु की बात, x 2
मन मेरे क्यों ना.....

1 सारा दिन, अहंकार में रहता
गुरु का सिमरन, तू नहीं रटता x 2
काहे का करे अहंकार,
मन मेरे क्यों ना.....

2 पाँच विषयों में, हर पल खेले
दिखावे के हैं, हम गुरु के चेले x 2
कुछ तो सोच विचार,
मन मेरे क्यों ना.....

3 बातों में सबसे, बड़ा सतसंगी,
सच में तो है, तू पाखंडी x 2
कभी तो बन मेरा यार,
मन मेरे क्यों ना.....

4 सेवा करे तो, मन की मत से,
मतलब नहीं, तोहे गुरु की संगत से x 2
खुश किसको करे मेरे यार,
मन मेरे क्यों ना.....

5 कबूल गुनाह, अपने गुरु के आगे,
डर के जिससे, काल भी भागे x 2
'अजायब', कर कृपाल से प्यार,
मन मेरे क्यों ना.....

19 सितम्बर 1920

बाबा सावन सिंह जी महाराज द्वारा एक प्रेमी के पत्र का जवाब

# एक पत्र

प्यारे बेटे,

मेरे हाथ में आपके भेजे हुए जून 1920 के दो पत्र हैं। मुझे जानकर बहुत खुशी हुई कि आपने बहुत तकलीफ उठाकर श्रीमती पी. की मदद की।

सृष्टि की अर्थव्यवस्था में दर्द के बारे में आपका प्रश्न उन मुख्य समस्याओं में से एक है जिनके बारे में तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक आत्मा निचले मंडलों पर है। इतना कहा जा सकता है कि उस समय आत्माएं बेहोश थी, रचयिता का मकसद था कि आत्माएं पूर्ण चेतना प्राप्त करके सच्चखंड जाएं।

चेतना जगाने और उनमें सच्चखंड पहुँचने की इच्छा पैदा करने के लिए आत्माओं को दर्द से गुजरना जरूरी था, नहीं तो वे बेहतर हालत होने की जरूरत महसूस न करती। इस दुनिया में संतुष्ट आत्मा को रचयिता से जुड़ने की जरूरत महसूस नहीं होती। इस बात की सच्चाई आत्मा के ऊपर उठने के बाद साबित हो जाती है।

आपकी शिकायत गलत नहीं कि आपने आठ साल के लम्बे समय तक कड़ी मेहनत की और ज्यादा प्रकाश नहीं देखा। आप किसी भी अंधविश्वास में न रहें। दुनिया में केवल राधास्वामी ही ऐसा पंथ है जो अंधविश्वास में यकीन नहीं करता। यह पंथ प्रेमियों को ऊपर उठकर अनुभव करने के लिए कहता है। आत्मा पर जन्मों–जन्मों से कर्मों की मैल चढ़ी हुई है, जब तक यह मैल धुल न जाए आत्मा ऊपर नहीं उठ सकती। इसके लिए कोई निश्चित समय नहीं, यह पिछले कर्मों के हिसाब से तय होता है।

ऐसी भी आत्माएं हैं जिन्हें बीस साल बाद भी कुछ अनुभव नहीं होता, प्रकाश दिखाई नहीं देता लेकिन कुछ ऐसी भी आत्माएं हैं जिन्हें गुरु पहले

दिन ही अपने स्वरूप का दर्शन करवा देते हैं। चिन्ता न करें, एक दिन पर्दा जरूर खुलेगा। भजन–अभ्यास में अपना उत्साह और रूचि बनाए रखें।

सिमरन के समय अपना ध्यान बिना किसी दवाब के आँखों के बीच केन्द्रित करें। अपना ध्यान दाहिनी आँख के कोने के थोड़ा बाँईं ओर रखें, दोनों आँखों के बिल्कुल बीच में नहीं बल्कि थोड़ा दाहिनी आँख की ओर रखें। चाहे प्रकाश न दिखाई दे फिर भी अंधकार में लगातार अपना ध्यान केन्द्रित करने की कोशिश करें। लगातार अंधकार में देखते रहें, कुछ देर अभ्यास करने के बाद प्रकाश दिखाई देगा फिर उस प्रकाश पर ध्यान केन्द्रित करें। जब आत्मा आँखों के केन्द्रबिन्दु पर अपनी जगह बना लेती है तब मन अपने काम बंद कर देता है, मतलब कोई विचार नहीं आते।

आप महसूस करेंगे कि आत्मा निचले छह मंडलों से ऊपर उठकर आँखों के केन्द्रबिन्दु पर आ गई है। जब ध्यान पूरी तरह आँखों के

केन्द्रबिन्दु पर टिक जाएगा तब आवाज अपने आप ही आँखों के पीछे चली जाएगी और तीसरे तिल पर एक तारा दिखाई देगा फिर सूरज, चन्द्रमा और गुरु का नूरी स्वरूप दिखाई देगा। फिर शब्द–धुन ऊपर से आती हुई महसूस होगी और आत्मा को ऊपर की तरफ खींचेगी।

जब पहली बार गुरु का स्वरूप दिखाई देता है वह लम्बे समय के लिए नहीं होता। वह आता–जाता रहता है लेकिन जैसे–जैसे प्रेमी, प्रेम पूर्वक अभ्यास में तरक्की करता जाता है, स्वरूप टिकने लग जाता है फिर प्रेमी को लगता है कि सारे संसार में इससे ज्यादा प्यारी चीज और कोई नहीं। फिर गुरु, प्रेमी को उसके सब तरह के सवालों के जवाब अंदर से देता है। जब आत्मा को उस मंडल की पूरी पावर मिल जाती है तब गुरु इसे ऊपर ले जाते हैं और आत्मा धीरे–धीरे अपनी चढ़ाई का सफर पूरा करती है। नाम का सिमरन तब तक पूरा नहीं होता जब तक मन विचार पैदा करना बंद न कर दे और शरीर से चेतना निकल न जाए।

जब श्रीमती पी. आपके पास आएं, उन्हें ये आध्यात्मिक निर्देश बताएं और उनसे कहें कि अपनी समाधि और मध्यमवादी काम छोड़ दें। प्रेम और धैर्य से अपनी कोशिश जारी रखें। गुरु कोशिश की कमी को नजरअंदाज कर देंगे लेकिन विश्वास की कमी को नजरअंदाज नहीं करेंगे। भले ही कोई इस पंथ का त्याग कर दे लेकिन गुरु उसे नहीं त्यागते। अगले जन्म में प्रेमी ने जहाँ अपना काम छोड़ा है उसे फिर वहीं से शुरु करना होगा।

मैं चाहता हूँ कि आप दोनों अपनी आध्यात्मिक यात्रा इसी जीवन में पूरी कर लें फिर आपको वापिस इस संसार में आने के बारे में नहीं सोचना चाहिए। गुरु के सिवाय कोई भी इस जीवन में अपनी यात्रा पूरी करने में सक्षम नहीं। यात्रा का कुछ हिस्सा इस दुनिया में पूरा होता है और बाकी बचा हुआ हिस्सा ऊपर के मंडलों में पूरा होता है।

आपका प्यारा,

सावन सिंह

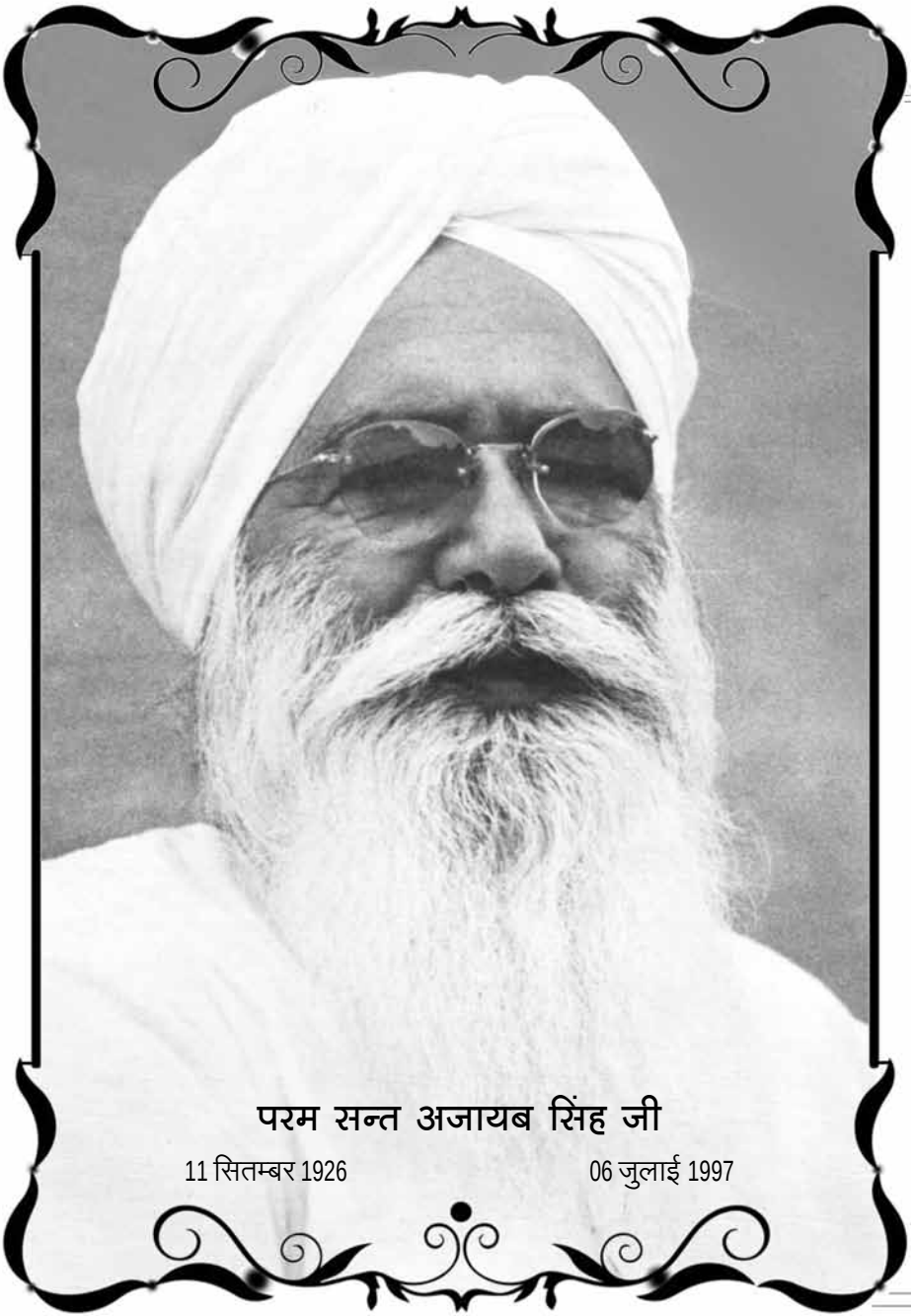

## परम सन्त अजायब सिंह जी

11 सितम्बर 1926 — 06 जुलाई 1997

सतसंग– परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज

29 दिसम्बर 1988

16 पी.एस.राजस्थान

# परमात्मा

गुरु नानक देव जी व गुरु अंगद देव जी की बानी DVD - 544(5)

जब धर्म का पतन होने लगता है तब दुनिया परमात्मा की भक्ति को छोड़कर कर्मकांड में लग जाती है, पुरोहितवाद जन्म ले लेता है। पंडित, मुल्ला, भाई, पादरी सभी एक श्रेणी के होते हैं, ये खुद भी बाहरमुखी होते हैं और जनता को भी बाहरमुखी कर देते हैं। ये बेचारे खुद भी पानी में मधानी चला रहे हैं और जनता को भी इसी तरफ लगा देते हैं।

हमें महात्माओं की लेखनियों से पता लगता है, उनके ग्रंथ और पुस्तकें अंदर जाने की हिदायत करते हैं कि **परमात्मा** आपके अंदर है। हम अंदर जाकर ही उससे मिल सकते हैं। सबसे पहले किसी ऐसे महात्मा से मिलें जो अंदर जाता हो वही आपको अंदर लेकर जा सकता है। अफसोस से कहना पड़ता है कि कोई भी सच सुनने के लिए तैयार नहीं होता।

जिन महात्माओं के नाम पर ये धार्मिक नेता चलने का दावा करते हैं, उन महात्माओं ने कठिन मेहनत की, मन के साथ बहुत संघर्ष किया, पिंड को छोड़कर ब्रह्मांड पर चढ़े, मालिक के साथ मिलाप किया। ये धार्मिक नेता उसके उलट ऐश–ईशरतों में फँस गए और इन्द्रियों के भोगों के गुलाम होकर रह गए। इन्हें परमात्मा या सच्चखंड में कोई दिलचस्पी ही नहीं।

प्यारेयो, हम जन्म–जन्मांतर से **परमात्मा** से बिछुड़कर बाहर भटक रहे हैं। हमारे अध्यापक और माता–पिता बाहरमुखी होने में हमारी बहुत मदद करते हैं। वे हमारे अंदर, बाहर के रीति–रिवाज का उत्साह भर देते हैं। कबीर साहब कहते हैं, ''हमारे ऊँचे भाग्य हों तो हमारा मिलाप किसी कमाई वाले महात्मा के साथ होता है। बहुत थोड़ी आत्माएं ही ऐसा कर्म लिखवाकर लाती हैं जिनका मिलाप गुरु के साथ लिखा होता है।''

आप सोचकर देखें, पता नहीं यह आत्मा कब से संसार में भटक रही है, इसे कितने युग हो गए हैं, इसके कितने जन्म हो चुके हैं? इस आत्मा को अंतर्मुखी करना किसी रूहानी महात्मा के लिए आसान काम नहीं इसलिए महात्माओं को बार–बार सतसंग में समझाना पड़ता है, भजन–अभ्यास की प्रैक्टिस करवानी पड़ती है, वे खुद नमूना बनकर बताते हैं।

हम बचपन से ही बाहरमुखी रहने के आदी हैं, हमारा रुझान बाहरमुखी ही होता है। महात्मा जन्म से ही अंतर्मुखी होने का साधन अपनाते हैं, उनकी भावना सदा ही अंतर्मुखी होती है। हम महात्मा का जीवन पढ़ते हैं कि महात्मा बचपन से ही आँखें बंद करके बैठते हैं और उन्होंने अपना जीवन **परमात्मा** की खोज में बिताया होता है। दुनियादार और महात्मा के जीवन का हजारों–लाखों कोस का फर्क होता है।

आपके आगे रोज की तरह सारंग की वार का शब्द रखा जा रहा है। पहले गुरु अंगददेव जी महाराज का शब्द है फिर गुरु नानकदेव जी का शब्द है। गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं कि जब ये बंजारे जीव **परमात्मा** के पास से चलते हैं तब शाह परमात्मा इन्हें कुछ श्वासों की पूँजी देकर भेजता है कि आप इससे अच्छा काम करें।

**परमात्मा** हमें यहाँ अच्छा व्यापार 'शब्द–नाम' की कमाई करने के लिए भेजता है। परमात्मा कहता है, ''मैं आपको यह मौका देता हूँ अगर आप इस जामें में 'शब्द–नाम' की कमाई करेंगे तो मैं आपको वापिस अपने घर आने पर शबाशी दूँगा। मेरा हुक्म और प्यार सदा ही आपके साथ है।'' हम वहाँ से जो पूँजी लेकर आते हैं कुछ आत्माएं उस पूँजी में बढ़ोतरी करके अपने पिता परमात्मा को खुश कर लेती हैं। जो आत्माएं विषय–विकारों की दुनिया में भटक जाती हैं, इन्द्रियों की गुलाम बन जाती हैं वे **परमात्मा** की दी हुई श्वासों की पूँजी को गँवाकर चली जाती हैं।

**साह चले वणजारया लिखया देवे नाल।**
**लिखे ऊपर हुक्म होय लईऐ वस्तु समाल।।**

गुरु अंगददेव जी कहते हैं, ''जब हम **परमात्मा** की तरफ से चलते हैं तब परमात्मा हमारे हाथ और मस्तक में लिख देता है कि तुझे सुख–दुख, गरीबी–बीमारी मिलेगी और तेरी मौत कहाँ पर होगी? मैं तुझे बेलगाम नहीं छोड़ रहा हूँ। तू अपनी मनबुद्धि से जितना चाहे बढ़ ले लेकिन जब मैं तेरी डोर खींचूंगा तब तेरा दुनियादारी का जोर किसी भी काम नहीं आएगा।''

***जैसी कलम भिड़ी है मस्तक तैसी लीड़े पार***

जब परमात्मा हमारे नेक कर्मों का सुख देता है, हमें हुकूमत हासिल करने का मौका देता है अगर हम समझदार हैं तो परमात्मा की भक्ति करते हैं, परमात्मा के साथ जुड़े रहते हैं और कहते हैं, ''हे **परमात्मा**, ये सब तेरी ही दया है।'' परमात्मा की दी हुई वस्तुओं को बहुत संभालकर इस्तेमाल करते हैं। सच्चाई से आँखें मोड़ लेना अक्लमंदी नहीं। कबूतर मौत को देखकर आँखें बंद कर लेता है लेकिन थोड़ी देर के बाद ही वह अपने आपको बिल्ली के मुँह में पाता है।

**वस्तु लई वणजारई वखर बधा पाए।**
**केई लाहा ले चले ईक चले मूल गँवाए।।**

कई लोग इंसान की देह रूपी सौदा लेकर संसार में आए। कईयों ने इस देह में बैठकर नाम का व्यापार किया जो हम चौरासी लाख योनियों में नहीं कर सकते थे। कई तो इसमें बैठकर लाभ ले गए, कई इंसानी जामें के हकदार नहीं रहते, वे मूल भी गंवाकर चले जाते हैं। गुरु साहब कहते हैंः

***पेड़ मंडा हो कटिए ते डाल सुखिन्दे***

जिस पेड़ की जड़ कट जाए उसकी डालियां सूख जाती हैं, वह पेड़ हरा नहीं रह सकता। जिसने अपनी जिंदगी की जड़ ही काट ली हो वह

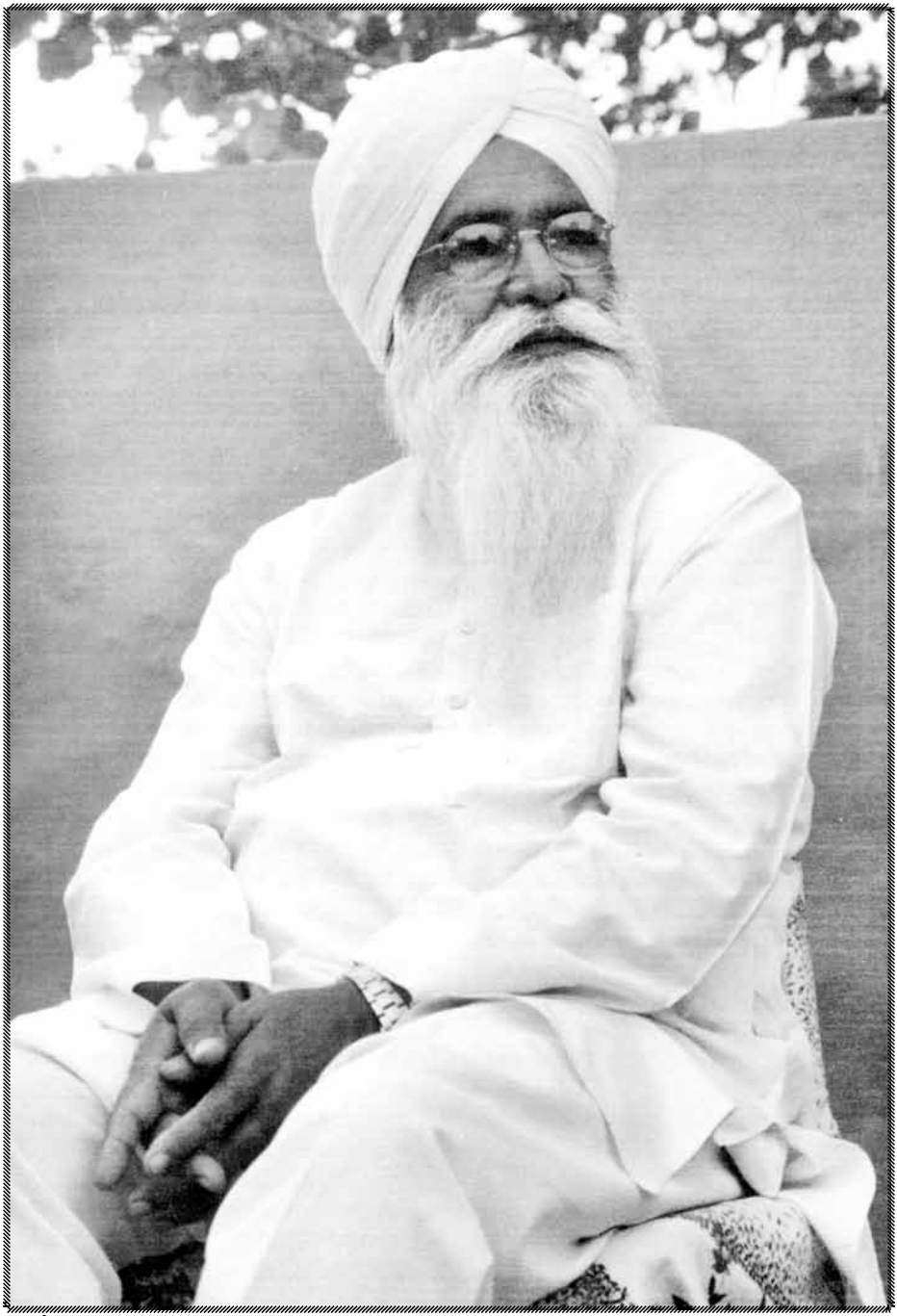

इंसानी जामें का हकदार ही नहीं रहा तो वह किस तरह नाम की कमाई करेगा, उसे कब मौका मिलेगा? गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

***अबके छुटके ठौर न ठाव***

**थोड़ा किने न मंगयो किस कहिए शाबास।**
**नदर तिन्हां को नानका जे साबत लाए रास।।**

गुरु साहब कहते हैं कि आज तक दुनिया के पदार्थ कभी किसी ने कम नहीं मांगे। जिसे एक लाख मिल जाता है, वह दो लाख की ख्वाहिश करता है। जब दो लाख मिल जाते हैं तो चार लाख की ख्वाहिश करता है। जो एक जिले का मालिक बन जाता है, वह चाहता है कि सारे सूबे का मालिक बन जाऊं। जब सूबे का मालिक बन जाता है तो चाहता है कि सारे मुल्क का ही मालिक बन जाऊं। मुल्क प्राप्त करके भी उसे सब्र नहीं होता तो चाहता है कि मैं पड़ोसी मुल्क पर भी कब्जा कर लूं।

आपको पता है कि हिटलर और शाह सिकन्दर जैसे लोगों ने कितने स्वपन लिए कि हम दुनिया में विजेता साबित हों। सन्त हमें हाथ पर हाथ रखकर बैठना नहीं सिखाते। पुरुषार्थ करना इंसान का धर्म है। बच्चा बड़ा होने के लिए हाथ–पैर मारता है। आपको जो मिलना है वह आपके जन्म से पहले ही तय हो चुका है, वह आपको अवश्य मिलेगा। अगर आप ज्यादा वस्तुएं प्राप्त करने के लिए अपने कीमती उसूल कुर्बान करते हैं, ठग्गी–बेईमानी करते हैं तो जब आप **परमात्मा** के पास वापिस जाते हैं तब परमात्मा किसको शाबाश दे? गुरुमुखों के सिवाय कोई ऐसा नजर ही नहीं आता जो भूखे रहकर भक्ति करता है, परमात्मा का शुकर करता है।

***जिसको कछु न चाहिए सोई शहन्शाह***

इंसान की ख्वाहिशें ही इंसान को कंगाल बनाए रखती हैं। जिसके अंदर दुनिया भरी हुई है, जो दुनिया के सामान को पाकर तृप्त नहीं हो रहा उससे बड़ा कंगाल कौन है?

कबीर साहब पहले सन्त हैं जो इंसानी जामें से नीचे नहीं गए, वे अपनी मर्जी के मुताबिक संसार में आते रहे हैं। आप सोचकर देखें, जिसके पास इतनी शक्ति हो कि जो अपनी मर्जी के मुताबिक जन्म ले सकता हो वे किसी राजा के घर भी पैदा हो सकते थे लेकिन वे बहुत ही गरीब परिवार में आए। हिन्दुस्तान में जुलाहे लोग बहुत गरीब समझे जाते हैं क्योंकि ये लोगों का ताणा बुनकर ही अपना गुजारा करते हैं।

बड़े–बड़े राजा–महाराजा कबीर साहब के सेवक थे। वे उनको महलों में रख सकते थे, उनके रहने के लिए अच्छा मकान बनवा सकते थे लेकिन उन्होंने ताणा बुनने में ही बादशाही समझी। उन्होंने कुलमालिक होकर भी अपने काम को बुरा नहीं समझा। उन्होंने हमें उपदेश दिया कि प्यारेयो, आप जहाँ भी जाकर जन्म लेते हैं वह पहले से ही आपके कर्मों में लिखा हुआ है। आपको वह अवश्य मिलना है, वह घटता–बढ़ता नहीं।

शाह बल्ख बुखारा अच्छे राजमहल में रह रहा था, बहुत फौजों का मालिक था। उसकी हुकूमत काफी इलाके में थी। जब बल्ख बुखारा ने प्रभु की नजर को समझा तब वह अति गरीब घराने के कबीर साहब का नौकर बन गया, मुफ्त में उनका ताणा बुनने लगा। कबीर साहब ने कहा, ''तू बल्ख बुखारा का बादशाह है, मैं एक गरीब जुलाहा हूँ, तेरा मेरा निर्वाह कैसे होगा?'' बल्ख बुखारा ने कहा, ''मैं बादशाह बनकर नहीं, भिखारी बनकर, गरीब बनकर आपके द्वारे पर आया हूँ। आप मुझे जैसा भी रूखा–सूखा देंगे, मैं खाकर गुजर कर लूँगा।'' बल्ख बुखारा के ऊपर **परमात्मा** की नजर हुई और उसने उस नजर को पहचान लिया।

बल्ख बुखारा के लड़के ने बहुत अच्छी दावत देनी थी। उस दावत में काफी अहलकारों ने इकट्ठे होना था। बल्ख बुखारा के लड़के के दिल में ख्याल आया कि इस मौके पर पिता का होना बहुत जरुरी है। वह अपने पिता को बुलाने के लिए गया। बल्ख बुखारा ने सोचा अगर मैंने इसे

समझाया तो शायद इसे समझ न आए। बल्ख बुखारा ने थोड़ा सा हलवा एक शीशे पर लगा दिया, शीशे की रोशनी मद्धम हो गई। बल्ख बुखारा ने कहा, ''देख बेटा, पहले यह शीशा कितना अच्छा था, हलवा लगाने से यह धुंधला हो गया है, अब इसमें अपना मुँह दिखाई नहीं दे रहा। इसी तरह दुनिया के ऐशो–आराम, अच्छे खाने अपने आपको पहचानने नहीं देते, प्रभु की भक्ति करने नहीं देते। मुझे जो सुख कबीर साहब का ताणा बुनने में और भक्ति करने में मिला है वह सुख बादशाही में नहीं।''

गुरु अंगददेव जी महाराज कहते हैं कि **परमात्मा** हमें कितने भी पदार्थ या रूतबा दे दे, हम और माँगते हैं। परमात्मा किसे शाबाश दे, कोई नजर ही नहीं आता? सिर्फ गुरुमुख लोग ही परमात्मा की शाबाश के काबिल होते हैं, वे दुख में रहकर भी सुख मनाते हैं। जैसे माता को बच्चे का फिक्र होता है कि बच्चे को किस चीज की जरुरत है, मैं उसे पूरा करूँ। इसी तरह गुरुमुख भी **परमात्मा** की नजर में होते हैं। परमात्मा को पता होता है कि इसे किस चीज की जरुरत है? इसकी किसमें बेहतरी है, परमात्मा वही करता है जिसमें उसकी बेहतरी होती है।

## जुड़ जुड़ विछड़े विछड़ जुड़े, जिव जिव मुए मुए जीवे।

अब गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं, ''हम अनेकों बार किसी परिवार में आकर जुड़ते हैं। उस परिवार में कोई बाप बनता है, कोई बेटा बनता है, कोई भाई–बहन बनता है। कर्मों के अनुसार फिर बिछुड़ जाते हैं। हम पशु–पक्षी हैं तब भी मरते हैं अगर इंसान हैं तब भी मरते हैं। किसी ऊँचे रूतबे पर हैं चाहे राजा–महाराजा हैं, मौत फिर भी आती है। अगर गरीब हैं गलियों की खाक छानते फिरते हैं, मौत तब भी आती है। हम गिनती नहीं कर सकते कि पहले हम कितनी बार जन्में और कितनी बार मरे। हम कितनी बार किस परिवार में इकट्ठे हुए और आगे फिर कितनी बार इकट्ठे होना है, हम एक–दूसरे को पहचान भी नहीं सकते।''

## केतेया के बाप केतेया के बेटे केते गुरु चेले हुए।

आज तक हम कईयों के बाप बने और कितनों को हमने अपना बाप बनाया, इसकी कोई गिनती नहीं। इससे पहले हम कितनी बार गुरु बने और कितने ही चेले बनाकर छोड़ गए, इसकी भी कोई गिनती नहीं हो सकती। अगर हम पूरे गुरु के शिष्य होते तो हम भूतों की तरह यहाँ चक्कर न लगा रहे होते। पूरा गुरु नाम जपवाकर पहले दिन ही हमारी डोर ऊपर के मंडलों में बांध देता है।

*पूरा सतगुरु न मिलया सुणी अधूरी सीख*
*स्वाँग जति का पहनकर ते घर घर माँगे भीख*

ऐसे गुरु बने जो लोगों का खा–पीकर, मन–इन्द्रियों के गुलाम रहे। उन्होंने सेवक सिर्फ पैसों के लिए ही बनाए और सेवक भी मन–इन्द्रियों के गुलाम रहे। ऐसे गुरु मरकर कहाँ जाएंगे? ऐसे गुरु मरकर उन्हीं सेवकों के घर में बैल या ऊँट बनकर उनका कर्ज उतारेंगे। चेले उनको डंडे मारेंगे और उन पर चढ़ा करेंगे।

हमारे राजस्थान में गुरु धारण करना जरूरी है। चाहे गुरु जुआरी हो, चाहे गुरु चोर हो, बस, खीर–हलवा और सवा रूपये मत्था टेक दें तो गुरु चलकर आपके घर ही आ जाएगा। यहाँ से सत्तर–अस्सी मील दूर एक गाँव ताखरांवाली है। मैं उस गाँव में जाया करता था, वहाँ मेरा एक बहुत श्रद्धालु सेवक था। उस सेवक ने अपनी पत्नी को प्रेरित किया कि तू नाम ले। उसकी पत्नी ने कहा, ''तेरा मेरा रास्ता अलग है, तूने जिसे अपना गुरु धारण किया है मैं उसे गुरु धारण करना नहीं चाहती, मैं कोई और गुरु धारण करूंगी।'' उनके गांव में एक गुरु आया हुआ था। उसने उस गुरु के साथ बातचीत की। उस गुरु ने कहा, ''पहले तो दक्षिणा सवा रूपया होती थी लेकिन अब मंहगे भाव हैं, तुझे सवा दस रूपये देने पड़ेंगे।'' उन्होंने दिन तय कर लिया।

मैं आमतौर पर बहुत सादा खाना खाता हूँ। मैं जब उस गांव में जाता तो वे लोग मेरे लिए खुष्क रोटी बनाते। मेरे सेवक ने अपनी पत्नी से कहा, ''तू जिसे मर्जी अपना गुरु धारण कर ले लेकिन जब मैं अपने गुरु को अच्छा खाना बनाकर नहीं खिलाता तो तू भी अपने गुरु को अच्छा खाना बनाकर नहीं खिलाएगी।''

उस गांव में एक नानूनाथ था, उसने सवा दस रूपये में सौदा तय करवा दिया लेकिन अब सवाल हलवा और खीर का पैदा हुआ। उसकी पत्नी ने कहा, ''यह तो मेरे लिए समस्या है, मेरा पति नहीं मानेगा क्योंकि कभी–कभी उसका गुरु आता है तो मेरा पति अपने गुरु को खुष्क खाना खिलाता है। उसका गुरु खुष्क खाना खाकर खुश रहता है और जाता हुआ हमारे बच्चों को भी दो रूपये देकर जाता है। अब अच्छी बात तो यह है कि तू पैसे न ले या खीर–हलवा माफ कर दे।'' उस गुरु ने कहा, ''मैं गुरु नहीं बनूंगा।'' सोचकर देखें कि ऐसे गुरुओं और चेलों का क्या होगा?

ऐसे गुरुओं ने ही गुरुडम से नफरत पैदा की है। साँप का डसा हुआ इंसान रस्सियों से भी डरता है। यही कारण है कि हम सच्चे महात्मा से भी फायदा नहीं उठाते। हमारे दिल शक से भर जाते हैं कहीं यह भी झूठा न हो।

**आगे पाछे गणत न आवे, क्या जाति क्या हुण हुए।।**

आप कहते हैं कि हम यह भी गिनती नहीं कर सकते कि पहले हम कितनी जातियों में आए और हमें आगे का भी पता नहीं कि हमने कितनी जातियों और कितने धर्मों में जाना है?

**सब करणा किरत कर लिखिए, कर कर करता करे करे।।**

आपको अपने कर्मों के हिसाब से जो कुछ मिलना है, परमात्मा ने वह धुर से ही लिखकर भेज दिया है। वक्त आने पर घटना घट जाती है, जो कर रहा है वह **परमात्मा** ही कर रहा है।

**मनमुख मरिए गुरुमुख तरिए,**
**नानक नदरि नदर करे।।**

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि यह हमारा जातिय तजुर्बा है कि मनमुख जन्मते–मरते हैं। गुरुमुखों का उद्धार हो जाता है, जो गुरुमुखों की सोहबत में आ जाते हैं उनका भी उद्धार हो जाता है। गुरुमुख **परमात्मा** के हुक्म में आते है और परमात्मा के हुक्म में ही काम करते हैं।

**मनमुख दूजा भ्रम है दूजे लोभाया।**

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मनमुख उसे कहते हैं जो **परमात्मा** को छोड़कर दुनिया के पदार्थों के लोभ–मोह में लगे हुए हैं। वे इस भ्रम में हैं शायद! हमारे बुजुर्ग दुनिया के पदार्थ लेकर नहीं गए, हम इन्हें साथ ले जाएंगे। ऐसे लोग अगर भूले–भटके संगत में आ भी जाएं तो वे वहाँ भी द्वैत और ईर्ष्या में फँसे रहते हैं।

**कूड़ कपट कमावदे कूड़ो आलाया।**

मनमुख झूठ बोलते हैं, झूठ का ही व्यापार करते हैं और झूठ के सहारे ही जिंदगी व्यतीत करते हैं। उनका मोह कूड़ पदार्थों के साथ होता है। मनमुख भ्रम में आते हैं, भ्रम में ही जिंदगी व्यतीत करके चले जाते हैं। भ्रम उसे कहते हैं जिसका सिर–पैर न हो और हम उस बात को सच मान लेते हैं। जिस तरह दुनिया और दुनिया के पदार्थ सच्चे नहीं, दुनिया ने सदा नहीं रहना लेकिन हम भ्रम में ही इसे गले से लगाए बैठे हैं। जब मौत आती है तो आँख खुलती है कि ओह! मैंने अपना वक्त ऐसे ही गँवा दिया।

**पुत्र कलत्र मोह हेत है, सब दुख सबाया।**
**जम दरि बधे मारिए भ्रमें भरमाया।।**

गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैं कि मैं आपको अपनी आँखों देखी बताता हूँ कि मनमुखों को क्या–क्या सजाएं मिलती है? यम उन्हें मारते–

पीटते हैं, सजाएं देते हैं कि तुमने दुनिया में जाकर अत्याचार किए। तुम्हें दुनिया में 'शब्द–नाम' की पूँजी देकर भेजा था लेकिन तुम उस रास्ते को छोड़कर द्वैत और मैं–मेरी में फँस गए।

हम देखते ही हैं कि यहाँ पुलिस, अपराधी को पकड़कर पीटती है, वह सो नहीं सकता। पुलिसवाले उसकी बुरी हालत करते हैं लेकिन शरीफ आदमी को पुलिस कुछ भी नहीं कहती। इसी तरह भगवान ने यमों की सरकार बनाई हुई है और धर्मराज को लेखा रखने के लिए बनिया बनाया हुआ है, वह हर एक का हिसाब रखता है। कोई भी आत्मा उसके लेखे के बिना न संसार में आती है और न जाती है। हर एक को अच्छी तरह समझाया जाता है कि प्यारेया, ये तेरे अपने ही कर्म हैं। तब जीव पकड़ा हुआ होता है उस समय मुकर नहीं सकता।

**मनमुख जन्म गँवाया नानक हर भाया।**

गुरु नानकदेव जी ने इस शब्द में अच्छी तरह समझा दिया कि **परमात्मा** सबको नाम की पूँजी देकर भेजता है। जो परमात्मा के हुक्म में रहते हैं परमात्मा उन्हें शाबाश देता है, उन्हें अपने घर में जगह देता है। लेकिन मनमुख अपना जन्म गँवाकर चले जाते हैं, मनमुख को क्या शाबाश दें? परमात्मा मनमुख को कितना भी दे दे वे फिर भी भूखे ही रहते हैं।

हमें भी चाहिए कि हम गुरु नानकदेव जी के कहे मुताबिक 'शब्द–नाम' की कमाई करें। वह **परमात्मा** गुरुदेव जब हमें लेने के लिए आए तो हमें शर्मिन्दा न होना पड़े, हम खुशी–खुशी पहले ही तैयारी करके रखें।

***

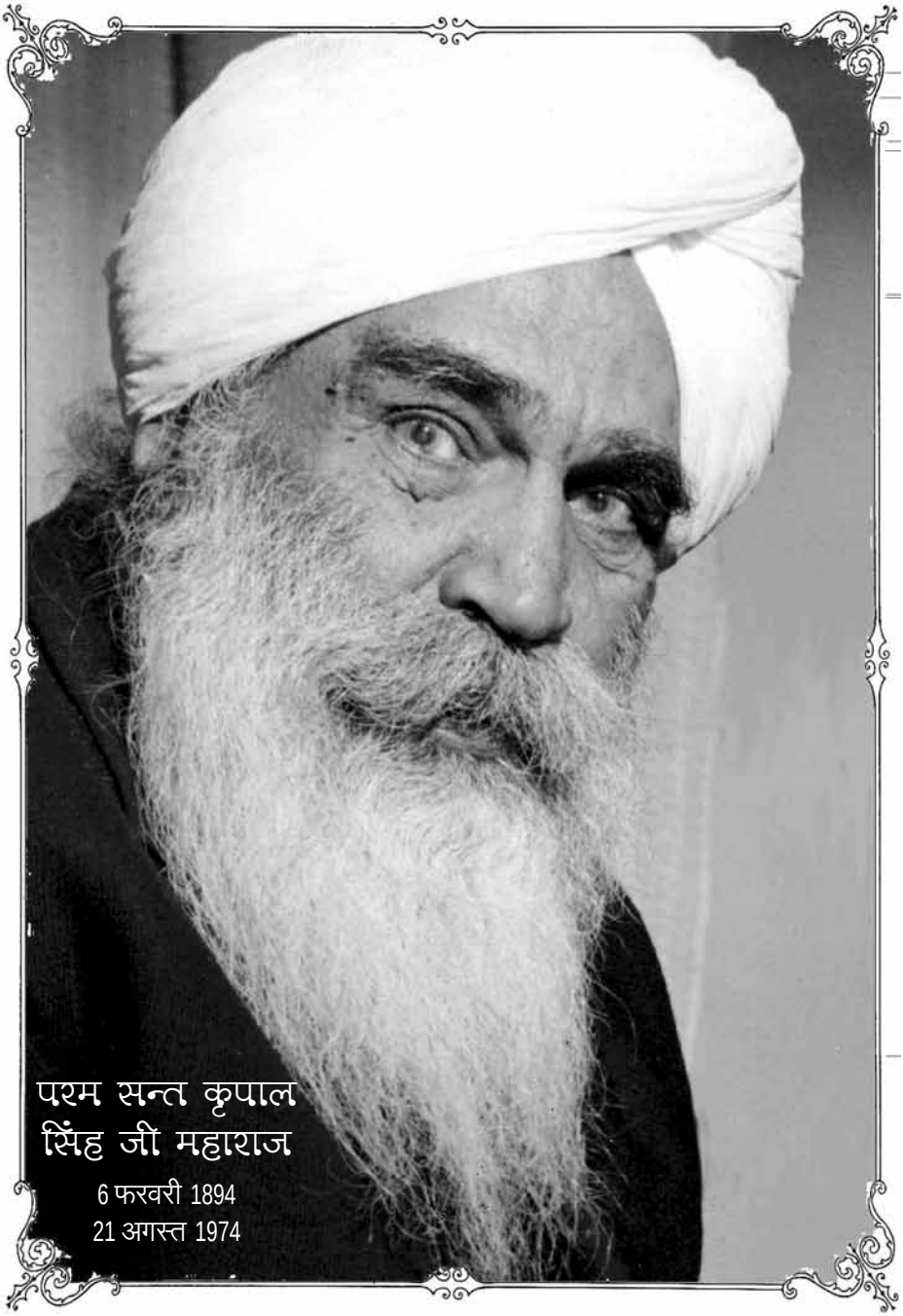
परम सन्त कृपाल
सिंह जी महाराज
6 फरवरी 1894
21 अगस्त 1974

परम सन्त अजायब सिंह जी महाराज द्वारा संगत को विदाई संदेश

12 सितम्बर 1989
16 पी.एस.राजस्थान

# सन्तों की सलाह

मैं परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के नाम पर आप सबका दिल से धन्यवाद करता हूँ, आप लोगों ने अपने घरों और कारोबार के बंधनों को छोड़कर महापुरुषों की याद में यहाँ आठ दिन का समय बिताया है। इसमें हमारी अपनी कोई बहादुरी या हिम्मत नहीं थी, यह भी उन महापुरुषों की दया हुई जो हम इस जलती–सड़ती दुनिया में उनकी याद मना सके।

महाराज कृपाल अनुशासन के बहुत पक्के थे, डायरी रखवाने का उनका यही मकसद था कि हम अनुशासन में रह सकें। सब सन्तों ने यही कहा है अगर आपने सन्तमत से कुछ हासिल करना है तो अनुशासन में रहना सीखें। सन्तों से प्यार करना यह नहीं कि हम उनके आगे–पीछे भागें, सन्तों की बात को मानना ही उनसे प्यार करना है। सन्तों को संगत अपनी जान से भी ज्यादा प्यारी होती है। हर सन्त ने अपने परिवार से ज्यादा संगत से ही प्यार किया है, सन्तों का परिवार उनकी संगत होती है।

मैं अक्सर बताया करता हूँ कि परिवार के लोग तो दुनियावी जायदाद के ही मालिक होते हैं लेकिन रूहानियत का मालिक सन्तों की संगत में से ही होता है। आप अपने दिल में सन्तों के लिए जितनी ज्यादा इज्जत रखेंगे उसमें आपका ही फायदा है। सन्तों के पास जाते समय हमें यह सोच लेना चाहिए कि हम किस मकसद के लिए जा रहे हैं? आप सन्तों के पास दिमाग खाली करके जाएं। अगर कोई घरेलु समस्या है तो उसे ठीक से और कम समय में बताएं ताकि उन्हें जवाब देने में आसानी हो।

**सन्तों की सलाह**, भगवान की ही सलाह होती है, उसी में आपकी बेहतरी है लेकिन सवाल करने से पहले यह अवश्य सोच लें कि वे हमें जो

जवाब देंगे, हम उसे मानेंगे। अगर हम सन्तों की बात मानते हैं तो उसमें हमारी ही बेहतरी है क्योंकि उन्हें जीव के अनेक जन्मों का ज्ञान होता है।

मैं आपको महाराज सावन सिंह जी के समय की एक मशहूर कहानी बताया करता हूँ, आपमें से कुछ लोगों को यह कहानी याद भी होगी। यह कहानी मासिक मैगजीन में भी छप चुकी है। पंजाब के एक प्रेमी ने महाराज सावन से कहा, ''एक बेटा तो अवश्य चाहिए।'' महाराज सावन ने उसे बहुत समझाया लेकिन वह नहीं माना। वह गुरु अर्जुनदेव जी की मिसाल देकर महाराज जी को समझाने लगा, ''गुरु अर्जुनदेव जी ने तो एक बेटे की जगह सात बेटे दिए थे, क्या आपके दरबार से एक बेटा भी नहीं मिल सकता?'' हम लोग यह नहीं जानते कि उन सात बेटों का उनके साथ क्या संबंध था, वो बेटे क्यों दिए, उन बेटों ने क्या किया? उनकी माता ने उस महापुरुष की कितनी सेवा की होगी।

उस प्रेमी के घर दस महीने बाद लड़का पैदा हुआ। मैं निर्मल सिंह को लेकर उस गाँव में सतसंग करने गया, तब वह लड़का बीस साल का हो गया था। सुबह के छह बजे थे अभी कुछ अंधेरा था, संगत इकट्ठी हो चुकी थी। उस लड़के ने अपनी माता, पिता और मामा का कत्ल करके उन्हें बैलों पर डाल दिया फिर वह लड़का आकर संगत में बैठ गया। जब उसने शब्द सुने तो उसे कुछ होश आई कि मैं क्या कर चुका हूँ? वह संगत से कहने लगा, ''अब आप लोग ही मुझे बचा सकते हैं।''

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''हम अंधो को यह भी नहीं मालूम कि सन्तों से क्या माँगना है?'' कनाडा में एक औरत ने मुझसे इसी तरह की माँग की, उस समय उसके पेट में बच्चा था। मैंने उससे कहा, ''कृपाल तेरी इच्छा पूरी करेगा। मैंने कृपाल का आसरा लेकर उस बच्चे का नाम रख दिया।'' उसके घर लड़का पैदा हुआ। उसे देखकर हिन्दुस्तान की एक औरत ने मुझसे कहा, ''मेरे दिल में आता है कि मैं

आपसे लड़ूं? मेरे घर लड़का क्यों नहीं?'' मैंने उस औरत से कहा, ''पंजाब में वह कातिल लड़का अभी जिंदा है अगर तू कहे तो मैं उस लड़के से फरियाद करूं कि वह कुछ समय आकर आप लोगों से प्यार कर जाए।'' सन्त जिस चीज के लिए मना करते हैं आप समझ लें कि उसमें आपका फायदा नहीं। सन्त संसार में हजारों माता–पिता का प्यार लेकर आते हैं। आप सन्तों से बात करने से पहले अपने आपसे सवाल करें।

मैं जब खूनीचक में था, लाला परिवार ने मेरे पास आकर कहा कि हम टयूबवेल लगवाना चाहते हैं। उस समय टयूबवेल लगवाने में काफी पैसे लगते थे। मैं इनके घर गया, रात भर इनके पास रहा। सुबह वापिस आते समय मैंने इस परिवार से कहा, ''मैं तुमसे एक बात करता हूँ अगर तुम मान जाओ तो ठीक अगर न मानों तो तुम्हारी मर्जी।'' इन्होंने कहा, ''हम मानेंगे।'' मैंने कहा, ''तुम टयूबवेल मत लगवाओ, तुम्हारा रूपया बर्बाद जाएगा।'' आज उसी जगह टयूबवेल लगा हुआ है, इनका काफी रूपया बर्बाद हुआ।

फिर किसी ने इन्हें जमीनें खरीदने के सब्जबाग दिखाए कि आप ये जमीनें खरीद लें इसके बहुत फायदे हैं। मैंने सोचा कि इन्होंने मेरी बात माननी तो नहीं फिर भी मैंने कहा, ''अगर तुम्हारे पास फालतू पैसे हैं तो ये जमीनें खरीद लें।'' जिसने इन्हें सब्जबाग दिखाए थे उसके साथ जाकर इन्होंने जमीनें खरीद ली। अब आप इनसे पूछकर देखें इन्होंने उस जमीन से क्या प्राप्त किया?

अगर सन्त हमें किसी बात के लिए मना करते हैं तो क्या हम उनकी बात मानते हैं? मैंने अपनी जिंदगी में अपने बुजुर्गों का कहना मानने की ज्यादा से ज्यादा कोशिश की, इसे अपना धर्म समझा। मेरे पास छोटे बच्चे आते हैं तो मैं उन्हें यही सलाह देता हूँ अगर आपको कामयाब होना है तो अपने माता–पिता का कहना मानें।

मेरी माता भोली थी, अच्छी थी, मेरे पिता बहुत सख्त स्वभाव के थे लेकिन मैंने अपने पिता को अपने ऊपर खुश कर लिया। मैंने उनसे कभी बहस नहीं की, मेरे पिता बुजुर्ग हो चुके थे। वह लोगों को दिखाने के लिए मुझसे कहते, ''छड़ी और पानी ले आ।'' मेरे पिता पानी तो आए हुए मेहमानों को पिलाते और उनके सामने छड़ी से मेरी पिटाई करते। क्या कोई ऐसा बेटा है जो गलती न होने पर भी छड़ी से अपने पिता की मार खाए? लेकिन मुझे उसमें से बहुत कुछ मिला। वह अंदर से मुझे बहुत आर्शिवाद देते, ''परमात्मा तुझे सुखी रखे।'' मेरी माता हमेशा कहती, ''अगर रब्ब है तो तुझे जरूर मिलेगा।''

बेशक माता–पिता कैसे भी हो उन्होंने असहाय अवस्था में हमारी मदद की होती है। मन आपका बहुत बड़ा दुश्मन है, यह अंदर बैठे–बैठे ताने–बाने भी बुनता है। यह मन आपको प्रेमी भी बना देता है, शब्द–रूप गुरु आपके अंदर बैठा है वह आपके प्रेम–प्यार को जानता है, वह बेइंसाफ नहीं। सन्त हमारे फायदे की ही बात करते हैं। जब मैं आर्मी में गया, हुक्म मानने की आदत की वजह से ही मेरे अफसर मुझ पर मेहरबान हुए। बाबा बिशनदास जी ने मुझसे जो कहा, मैं वह करता रहा। मुझे हुक्म मानने की आदत थी उन्होंने मुझसे कहा कि यह आश्रम तेरी कमाई से बना है, तुझे ईंटों के साथ नहीं बंधना, तेरा इस आश्रम पर कोई हक नहीं। उस गाँव के लोगों ने मुझसे मिन्नतें की अगर तुझे इस आश्रम में नहीं बैठना तो अपने किसी बंदे को ही बिठा दे। मैंने कहा, ''बाबा जी का हुक्म नहीं।''

यही बात महाराज कृपाल के समय में हुई। पश्चिम में बड़े–बड़े आश्रम हैं जो स्वर्गों जैसे हैं। वहाँ के प्रेमियों ने मुझसे कहा, ''ये आपके हैं।'' मैंने कहा कि मुझे अपने गुरुदेव की कोई भी बाहरी जायदाद नहीं चाहिए। मैंने उन आश्रमों की मैनेजिंग कमेटियाँ बना दी, उनसे कहा कि इनके इंतजाम आपके सुपुर्द हैं। मैं यहाँ बतौर मुसाफिर आया करूंगा। वहाँ दिन–रात सावन–कृपाल का यश हो रहा है, संगत फायदा उठा रही है।

मुझे हुक्म मानने की आदत थी। मेरे गुरुदेव ने मुझे जो हुक्म दिया उनका हुक्म मानना मेरा सबसे पहला धर्म था, चाहे लोगों ने मुझे पागल कहा। अब मैं जहाँ बैठा हूँ क्या वहाँ जायदाद नहीं बनी? एक बार एक सेवादार ने मुझे सलाह दी, ''खूनीचक से बर्तन ले आएं?'' मैं हँसा और उस पर नाराज हुआ, क्या तुझे खाना थाली में नहीं मिलता? तू मुझे पीछे क्यों ले जा रहा है, आगे की तरफ जाने की सलाह दे, तू कह और बर्तन ले आओ। मैं अपने गुरु से कहूँगा वे और बर्तन दे देंगे।

मेरे गुरु का मुझसे जायदाद छुड़वाने का यही कारण था कि इसे पता लग जाए कि सन्तों के रिश्तेदार, परिवार के लोग और नजदीक रहने वाले लोग उनकी जायदाद से चिपके होते हैं। महाराज जी ने कहा था, ''तू देखेगा तेरी जायदाद के कितने वारिस बनेंगे?'' वास्तव में, मेरे रहते हुए ही उस जायदाद के कई वारिस बनें। जमीन, घर मेरे नाम, मैं अभी जिंदा हूँ, किसी के हाथ में डंडा किसी के हाथ में बंदूक। सब बँटवारे के लिए तैयार। मैंने कहा, ''धन्य कृपाल, तेरियाँ तू ही जाने।''

जो प्रेमी दूर से आते हैं वे सन्तों के पास प्यार लेकर आते हैं और प्यार लेकर ही चले जाते हैं लेकिन सन्तों के परिवार के लोग जायदादों से बंध जाते हैं। आप सबसे पहले अपने बेलगाम मन को समझाएं कि हुक्म मानना पड़ेगा। सन्त नाजायज हुक्म नहीं देते। वे कहते हैं, ''पहले मन को शान्त करें, शान्त मन से भजन में कामयाबी मिलती है और गृहस्थ जीवन भी अच्छा बन जाता है।''

मेरी माता खाना बनाने में बहुत माहिर थी। हमारा सारा परिवार उसके खाने की बहुत तारीफ करता। मेरे पिता के सख्त स्वभाव के कारण परिवार का कोई भी सदस्य उनके आगे खाने की थाली रखने की हिम्मत नहीं करता था, यह सेवा मेरे जिम्मे थी। एक बार मेरे पिता ने थाली फैंक दी। दाल कहीं गिरी, रोटियाँ कहीं बिखर गईं। उन्होंने कहा, ''इसमें नमक ठीक

नहीं।'' मैंने हँसकर कहा, ''अब तो ठीक हो गया?'' मेरे कहने का भाव अगर आपका मन शान्त है तो आप यह बता सकते हैं कि इसमें क्या कमी है? जिन लोगों ने मेरे साथ जीवन बिताया है वे जानते हैं कि मैंने कभी खाने में नुक्स नहीं निकाला। हर रोज तो खाना एक जैसा नहीं बनता, कभी कोई कमी भी रह जाती है। अगर हम खाने को प्रसाद समझकर, मत्था टेककर खाएं तो उसमें हमें परमात्मा का रस आएगा। आप एक–एक निवाले के साथ गुरु को याद करें, उसमें अच्छा रस बन जाएगा।

गंगानगर में मेरा एक खास दोस्त था। वह गरीब था, बड़ी मुश्किल से गुजारा चलाता था। प्रेमी आत्मा थी, उसमें सतसंगी वाले सारे गुण थे। मुझे महाराज सावन ने अंदर से ही कहा कि इस शख्स की मदद करनी है। मैंने माँझूवास में अपनी जमीन बेचकर उस पैसे से उसकी मदद की। उसने कपड़े की बड़ी दुकान बनाई, वह गरीब से अमीर हो गया। वह आमतौर पर कहता, ''यह सावन शाह का गल्ला है, उसने इसकी चाबी मुझे दी हुई है।'' मैं उससे कहता, ''इतने ऊँचे कलाम नहीं बोलते।''

बीस साल तक उस प्रेमी के घर सतसंग चलता रहा। हम सब प्रेम–प्यार से उसके घर इकट्ठे होते। मैं पैंतिस मील साईकिल चलाकर प्रसाद के लिए लड्डू लेकर उसके घर आता। उनके घर में कुछ समय पहले किसी बच्चे की सगाई हुई थी, उस समय के लड्डू बचे हुए थे। घर के लोगों ने फायदा उठाकर हमारे प्रसाद के ताजे लड्डुओं को बदलकर उसकी जगह बासे लड्डू रख दिए। वे बासे लड्डू कुछ कम थे इसलिए उन्होंने उन लड्डूओं का चूरा बना दिया।

उस समय धर्मचन्द सतसंग किया करता था और मैं पाठ किया करता था। जब धर्मचन्द प्रसाद बाँटने लगा तो हैरान हुआ कि हम तो ताजे लड्डू लाए थे ये चूरा कैसे बन गए? धर्मचन्द ने जब चूरा मुँह में डाला, वह खट्टा था। धर्मचन्द बोल पड़ा कि हमारे लड्डू कहाँ हैं? मैंने धर्मचन्द को चुप

कराना चाहा लेकिन वह नहीं माना। उसने जिद्द करके घरवालो से लड्डू निकलवा लिए। मेरे कहने का भाव इतना ही है कि परमात्मा गुरु आपके अंदर है, आपकी जैसी चाकरी है वह वैसा फल आपको जरूर देता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी के जाने के लगभग एक सौ पचास साल तक यह प्रभाव रहा कि उनका सिक्ख झूठ नहीं बोलता। महाराज सावन सिंह जी के शिष्यों की भी यही कहानी थी कि यह सावन सिंह जी का शिष्य है, यह झूठ नहीं बोलेगा। लेकिन आज यह हालत है कि ब्यास में अगर दो लाख सतसंगी जाता है तो वहाँ पाँच लाख बेसतसंगी भी जाते हैं।

पिपली थाने में अपना एक सतसंगी थानेदार था, उसने थाने में सतसंग का प्रोग्राम रखवाया कि शायद कुछ लोग शराब–मीट छोड़कर सुखी जीवन बिताने लग जाएंगे। वह हनुमानगढ़ स्टेशन पर मेरा इंतजार कर रहा था। तभी वहाँ से डी.एस.पी. निकला वह उससे पूछने लगा, ''तू यहाँ क्यों खड़ा है?'' थानेदार ने कहा, ''मैं सन्तों की इंतजार कर रहा हूँ, उन्होंने पंजाब से आकर यहाँ सतसंग करना है।'' डी.एस.पी. ने कहा, ''पुलिसवालों का सन्तों से क्या मतलब? यह महकमा छोड़ो या सन्तों के पीछे लगो।'' जब मैं ट्रेन से उतरा तो डी.एस.पी. ने मुझसे कहा, ''आपने हमारा महकमा बिगाड़ दिया है।'' मैंने कहा कि बिगाड़ नहीं सुधार रहा हूँ। वह भी मेरे साथ सतसंग में आ गया। महाराज सावन कहा करते थे अगर एक आदमी पाँच–सात लोगों को सुधारे तो कितने लोग सुधर जाएंगे।

अगर सेवा करते हुए सेवादारों से कोई गलती या कोई ऊँच–नीच हो गई हो तो उसके लिए मैं आपसे माफी माँगता हूँ। दिल में कोई बात लेकर न जाएं। मैं उन सेवादारों का धन्यवादी हूँ जिन्होंने यहाँ सेवा की, सहयोग दिया। मैं आशा करता हूँ कि सब प्रेमी सिमरन करेंगे और परमात्मा कृपाल से प्रार्थना करता हूँ कि आपकी वापसी यात्रा अच्छी हो।

***

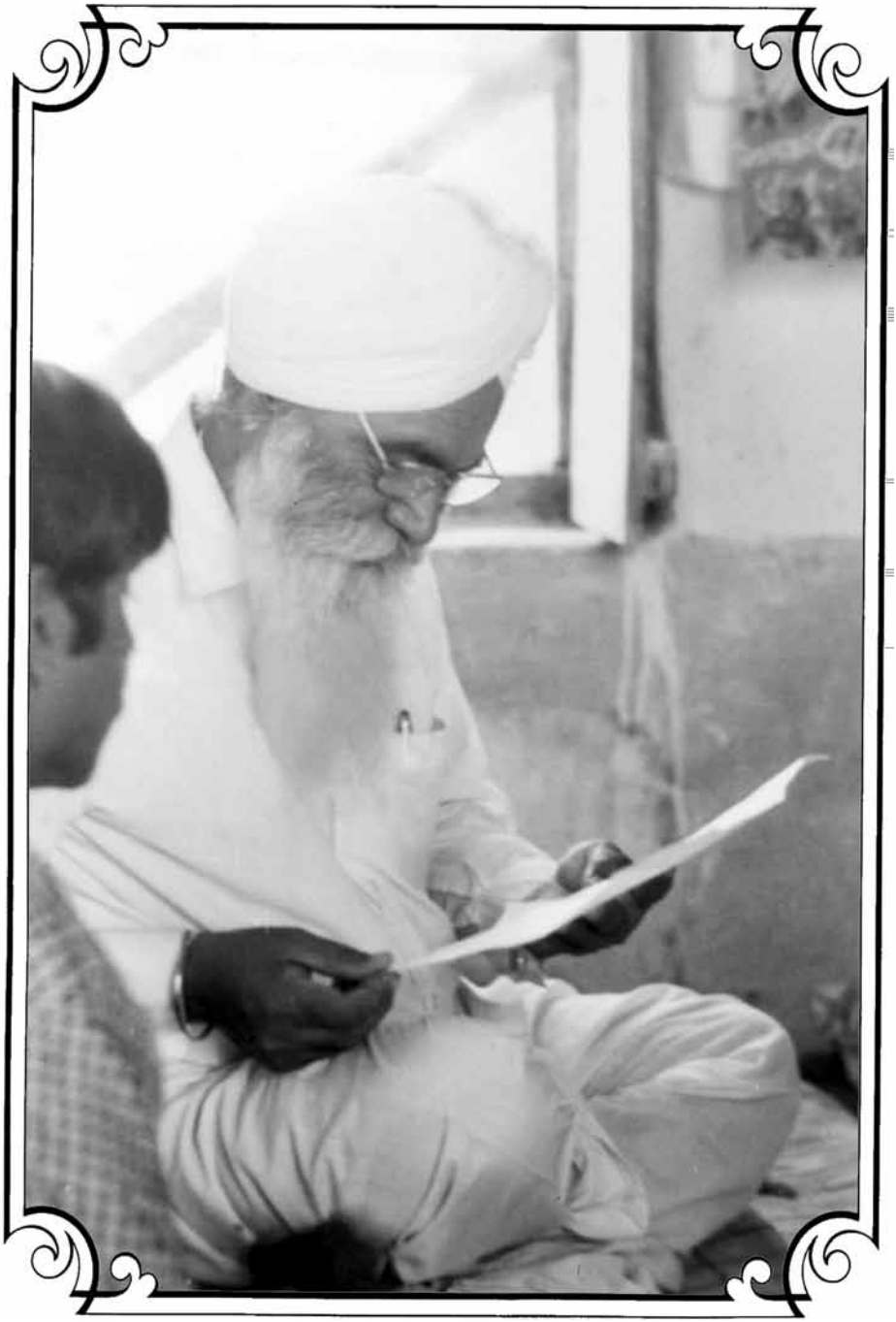

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियों के सवालों के जवाब

19 जनवरी 1985

मुम्बई

# सवाल-जवाब

***एक प्रेमी:*** *मेरे अंदर कभी-कभी गलत ख्याल अपने आप ही आ जाते हैं। क्या मैं उन ख्यालों को यह कहते हुए नजरअंदाज कर सकता हूँ कि मैंने मन को नहीं बनाया और मैं इन ख्यालों के लिए जिम्मेदार नहीं हूँ, क्या इस तरह सोचकर मैं उन ख्यालों से छुटकारा पा सकता हूँ?*

**बाबा जी:** हाँ भई, हर सतसंगी को गौर से सुनना चाहिए। हम जो ख्याल उठाते हैं या मन के कहने पर जो कर्म करते हैं उन कर्मों का हिसाब-किताब हमारी आत्मा को जरूर भुगतना पड़ता है। वही व्यक्ति जिम्मेदार है जिसके अंदर बैठकर मन कोई कर्म करता है।

***एक प्रेमी:*** *आप जब अपना रूहानी साधन कर रहे थे, उस दौरान आपके दिल के अंदर परमात्मा से मिलने की तड़प थी और ऐसा क्या था जिसके द्वारा आपने अपने मन को गुरु के चरणों और भजन-सिमरन की तरफ लगाकर रखा। यह भी बताएं कि आश्रम में रुहानी माहौल पैदा करने के लिए क्या करना चाहिए?*

**बाबा जी:** हाँ भई, मेरी आत्मा के अंदर परमात्मा से मिलने का दर्द था। मुझे बचपन से ही दुनिया के ख्याल नहीं आते थे, अगर कोई ख्याल उठा तो वह गुरु की तलाश थी। मैं हमेशा ही कहा करता था कि मुझे कोई जीवित महापुरुष मिलेगा, जिसके अंदर गुरु नानकदेव जी और कबीर साहब जैसी खासियत होगी।

महाराज कृपाल कहा करते थे, ''भूखे को रोटी, प्यासे को पानी कुदरत का उसूल है, जरूर मिलता है।'' परमात्मा ने मेरी पुकार को सच्चखंड में सुना। परमात्मा कृपाल के रूप में शरीर धारण करके मेरे बिना

बुलाए ही मेरे आश्रम आए और इस आत्मा को नाम का भेद देकर, अपनी तवज्जो देकर शान्ति बख्शी। मैंने हमेशा अपने गुरु को ही सोचा और गुरु को ही माँगा। मैंने अपने गुरु से दुनिया की कोई चीज नहीं माँगी।

महाराज सावन सिंह जी कहा करते थे, ''तराजू का जो पलड़ा भारी है तराजू उसी तरफ झुकता है।'' अगर आप दुनिया के ख्याल सोचते हैं तो आप दुनिया में ही रहेंगे अगर गुरु के ख्याल सोचते हैं, अपने अंदर गुरु के लिए तड़प पैदा करते हैं तो स्वाभाविक ही आपके अंदर गुरु का प्यार टिकना शुरु हो जाएगा। गुरु नानकदेव जी महाराज कहते हैंः

***जब ऐह रस आवे तब ओह ना रहावे***

रस एक ही आएगा, चाहे दुनिया का रस लें या गुरु के प्यार का रस लें। हमें सबसे पहले गुरु के साथ प्यार बनाना चाहिए, गुरु के बैठने के लिए जमीन तैयार करनी चाहिए। गुरु पवित्र है अगर हमारी जगह गंदी है, दुनिया के विषय–विकारों से भरी हुई है तो गुरु कभी भी वहाँ आकर नहीं बैठेगा। हम खुद भी गंदी जगह नहीं बैठते। कुत्ता भी पूँछ से जगह साफ करके बैठता है तो वह परमात्मा गुरु किस तरह हमारे विषय–विकारों के अंदर प्रकट हो सकता है।

अगर हमारे घर में किसी रिश्तेदार ने आना हो तो हम अपने घर को साफ करते हैं। हमारे दिल में ख्याल होता है कि हमारा रिश्तेदार हमारे घर की निन्दा न कर दे। क्या हमने कभी गुरु के लिए ऐसा सोचा है कि उसके लिए भी सफाई की जरूरत है या गुरु ने जिस स्टेज पर बैठना है हमने उस स्टेज को गन्दा किया हुआ हैं। कहीं वह नाराज होकर तो नहीं चला जाएगा? जो लोग विषय–विकार भी भोगते हैं और गुरु भक्ति में भी पैर रखते हैं वे अपने आपसे धोखा करते हैं और प्रभु से मजाक करते हैं।

मैं हमेशा ही बताया करता हूँ कि नाम देते समय सतगुरु आपके अंदर बैठ जाता है, काल पहले से ही बैठा है। जब नाम लेकर सतसंगी व्याभिचार

करता है, बुरे–खोटे कर्म करता है तो काल अंदर बैठा ही सतगुरु को बताता है, ''तूने इस जीव को इतनी ऊँची दौलत दे दी है। देख! ये कैसे कर्म करता है, क्या यह नाम देने के काबिल था?''

सतगुरु बहुत भरोसे वाला होता है, दयालु होता है वह सब्र नहीं छोड़ता। गुरु, काल से कहता है, ''मैंने इसकी जिंदगी बनानी है, यह आज नहीं तो कल समझ जाएगा।'' सतगुरु अपने हाथ से डोर नहीं छोड़ता, ढीली जरूर कर देता है। जिसने जीवनकाल में ही कामयाब होना है जरूरी है कि उसे पाँच डाकुओं से मुँह मोड़कर अपना मुँह गुरु की तरफ करना पड़ेगा। सेवक अपने हृदय को पवित्र करके अपने आपको अपराधी बनाकर खड़ा हो जाता है। मैंने पिछले दिनों एक भजन बोला हैः

***ना मैं सोहणी ना गुण पल्ले, तू मेरा कन्त प्यारा***

मेरे अंदर कोई गुण नहीं है, मैं तो भिखारियों से भी बुरी हूँ। आखिर मैं तेरी औरत बन गई हूँ , तू मेरा प्यारा पति है, अब मेरी लाज तेरे हाथ में है।

***एक प्रेमी:*** *मैंने सुना है कि नामलेवा को चार जन्मों में पूर्णता प्राप्त करनी होती है, मैं महसूस कर रहा हूँ कि यह मेरा आखिरी जन्म है। मैं अपनी तरफ से थोड़ी बहुत कोशिश कर रहा हूँ, मुझे यकीन है कि आखिरी वक्त आप मुझे लेकर जाएंगे?*

**बाबा जी:** महाराज सावन सिंह जी का एक प्रेमी आर्मी में ड्यूटी दे रहा था इसलिए वह साल भर गुरु के दर्शनों के लिए नहीं आ सका। उसने महाराज सावन से कहा कि कबीर साहब ने कहा है अगर शिष्य, गुरु के पास साल भर नहीं आता तो गुरु, शिष्य का रिश्ता टूट जाता है। महाराज सावन ने दयालुता दिखाते हुए कहा, ''यह तो कबीर साहब ने कहा था मैंने तो ऐसा नहीं कहा, मैं तेरे प्यार में खिंचा हुआ जरूर आऊँगा।'' सन्त दयालु होते हैं, उनकी यही कोशिश होती है कि मैं अपने प्यारे बच्चे को दुनिया में न भटकने दूं या यह चार जन्म लगाए। सन्तों की ज्यादा से

ज्यादा यही कोशिश होती है कि शिष्य इसी जीवनकाल में शब्द की धार पैदा करें। गुरु आत्मा को 'शब्द' में मिलाकर ले जाते हैं अगर थोड़ी बहुत कसर होती है तो गुरु अंदर के मंडलों में ही उसकी पूर्णता कर देते हैं।

एक बार किसी प्रेमी ने इसी किस्म का सवाल किया था, उसका जवाब गुरु गोबिंद सिंह जी की घटना से दिया था। आज मैं फिर आपको वह बता देता हूँ। हिन्दुस्तान में वह समय बड़ा दुखदाई था, उस समय किसी की इज्जत सुरक्षित नहीं थी इसलिए गुरु गोबिंद सिंह जी ने जुल्म की खातिर तलवार उठाई। उस वक्त जो सिक्ख गुरु गोबिंद सिंह जी के साथ रहते थे, कष्ट के समय वे सिक्ख उनका साथ छोड़ गए और गुरु गोबिंद सिंह जी को लिखकर दे आए, ''तू हमारा गुरु नहीं, हम तेरे सिक्ख नहीं।''

वे जब घर आए तो उनकी घरवालियों को बहुत कष्ट हुआ। उन औरतों ने कहा, ''आप लोग गुरु को पीठ दिखाकर, बेदावा लिखकर आ गए हैं।'' आपको पता है कि हिन्दुस्तान में औरतों का पहनावा, मर्दों से अलग होता है। उन औरतों ने कहा, ''तुम लोग हमारी जगह चूड़ियाँ पहनकर घर में बैठो, हम तुम्हारी जगह जंग में जा रही हैं। तुम्हारा तो मुँह देखने के भी काबिल नहीं है।''

वे सिक्ख पंजाब के माझा इलाके के थे, आखिर गुरु गोबिंद सिंह जी पंजाब के मालवा इलाके में चले गए। वे चालीस प्रेमी थे, उनके साथ एक औरत माता भागो भी आ गई। फिर गुरु गोबिंद सिंह जी को एक हमले का सामना करना पड़ा, वे सिक्ख हमलावरों के साथ लड़कर घायल हो गए। उन सिक्खों ने अपनी जानें गँवाकर आर्मी के दस्ते को गुरु गोबिंद सिंह जी तक नहीं पहुँचने दिया। जत्थेदार भाई महा सिहँ और माता भागो बच गए।

जब गुरु गोबिंद सिंह जी उनके पास आए तो सिर्फ दो सेवक ही सिसक रहे थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने भाई महा सिहँ का मुँह रूमाल से पोंछकर कहा, ''माँग क्या माँगता है, तुझे किस चीज की जरूरत है, तुझे

दुनिया का राजा बना दें?'' भाई महा सिहँ ने कहा, ''आप हमारी टूटी हुई को जोड़ दें, उस बेदावे को मेरी आँखों के सामने फाड़ दें।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''तू और कुछ माँग यह तो फाड़ा हुआ ही है।'' गुरु गोबिंद सिंह जी ने कहा, ''तू इसे पढ़ ले, तुम लोग तो लिख आए थे कि तू हमारा गुरु नहीं और हम तेरे सिक्ख नहीं लेकिन मैंने तो किसी जगह यह नहीं लिखा कि मैं तुम्हारा गुरु नहीं।''

बेशक सेवक, गुरु को छोड़ जाए लेकिन गुरु, सेवक को नहीं छोड़ता क्योंकि उसने नाम दिया होता है। मैं बताया करता हूँ कि गुरु, सेवक को तब तक नहीं छोड़ता जब तक उसे परमात्मा के आगे खड़ा न कर दे कि यह तेरा जीव है, भूल बख्शवाने के लिए आया है। गुरु दयालु होता है।

अगर सेवक थोड़ी बहुत भी कमाई करता है तो वह शरीर छोड़ने से एक–दो दिन पहले भी बता देता है। अच्छी कमाई वाले सेवक कई दिन पहले भी बता देते हैं कि गुरु मुझे चेतावनी दे गया है, मैंने फलाने समय जाना है। अगर अन्त समय वहाँ कोई बेसतसंगी न हो तो सतसंगी जरूर बताकर जाएगा, ''गुरु आए हैं और मैं जा रहा हूँ।'' अगर वहाँ कोई बेसतसंगी बैठा है तो वह बताकर नहीं जाएगा, खामोश ही चला जाएगा।

गुरु ने नामलेवा की जिम्मेदारी उठाई होती है। मुझे ग्रुप में, कई प्रेमी इंटरव्यू में भी बताते हैं और कई पत्र–तार भी भेज देते हैं अगर घर में किसी ने थोड़ा बहुत भी प्यार किया होता है, चाहे नाम न मिला हो, सतसंगी उसकी संभाल होते हुए देखते हैं कि हम उस समय कमरे में थे, हमने वहाँ आपकी मौजूदगी महसूस की।

कई प्रेमियों ने तो अपना तजुर्बा यहाँ तक बताया कि महाराज सावन सिंह और परमपिता कृपाल को भी वहाँ मौजूद देखा। सतसंगी को भजन–अभ्यास की चिंता होनी चाहिए। अन्त समय में आना गुरु का काम है, गुरु अपनी ड्यूटी में कभी कोताही नहीं करता। ***

12 दिसम्बर 1996

साँपला

परम सन्त अजायब सिंह जी द्वारा प्रेमियो को अभ्यास में बिठाने से पहले

# नाम का व्यापार

परमपिता परमात्मा सावन–कृपाल के चरणों में नमस्कार है। जिन्होंने गरीब आत्मा पर दया की, रहम किया, भक्ति का दान दिया, भक्ति करने का मौका भी दिया है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज ने अपनी बानी में लिखा है कि काल की नगरी में जीवों को मूर्खता चिपक जाती है।

काल हमारे तन के लिए जो धंधे रचे हैं, हम उन्हीं में उलझ जाते हैं। हम व्यापार और मनोरंजन के लिए लम्बी–चौड़ी यात्राएं करते हैं हालाँकि वे चीजें हमारे साथ नहीं जानी। जो चीज हमारे साथ जाएगी उसके लिए कोई भाग्यशाली विरला जीव ही लम्बी–चौड़ी यात्रा करके आता है। गुरु अर्जुनदेव जी महाराज कहते हैंः

*माया कारण धावही मूर्ख लोग अजान*
*इनमें कुछ संगी नहीं नानक साची मान*

हाँ भई, हमारे ऊँचे भाग्य हैं कि हम परमात्मा के चुनाव में आ गए हैं। उन्होंने दया करके हमें अपने नाम के व्यापार में लगा दिया है। **नाम का व्यापार** ही हमारे साथ जाएगा। इसके बगैर हम दुनिया में जो कुछ भी करते हैं उसे हमने यहीं छोड़ जाना है।

हाँ भई, आँखें बंद करके अपना सिमरन शुरु करें।

***

RNI No - RAJHIN/2003/9899

परमात्मा हमें कितने भी पदार्थ या रूतबा दे दे, हम और माँगते हैं। परमात्मा किसे शाबाश दे, कोई नजर ही नहीं आता? सिर्फ गुरुमुख लोग ही परमात्मा की शाबाश के काबिल होते हैं, वे दुख में रहकर भी सुख मनाते हैं।